आभामण्डल (ओरा)

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भगवान के मुखमण्डल के पीछे चित्र में एक गोलाकार मण्डल दिखलाया जाता है उसे आभामण्डल या ओरा कहते हैं। यह जड़ और चेतन दोनों को होता है। जड़ की की कोई विचारधारा नहीं होती। किन्तु जीवों एवं प्राणियों के भाव बदलते रहते हैं उससे आभामण्डल में भी परिवर्तन होता रहता है। भाव शुभ और अशुभ दोनों होते हैं। भाव चित्त से सम्बद्ध होकर विचार बन जाते हैं। मन से सम्बद्ध हो जाने से भूत, वर्तमान और भविष्य से सम्बन्धित चिन्तन करता है। आत्मा जब शरीर से जुड़ती है तब ओरा बनता है। प्रत्येक प्राणी का अपना आभामंडल होता है, पर वह किसी को दिखाई नहीं देता है।

कायोत्सर्ग की गहराई में जाने पर आभामंडल प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने लगता है। लेश्याध्यान रंगों का ध्यान है। माना जाता है कि जैसे लेश्या के रंग होते हैं वैसा ही व्यक्ति का आभामंडल बनता है। लेश्या अच्छी तथा बुरी दोनों ही प्रकार की होती है। आभामंडल शरीर के चारों ओर सूक्ष्म वलय होता है जिसे सामान्य आंखों से नहीं देखा जा सकता है। लेश्याध्यान में रंगों के द्वारा बुरी लेश्या को अच्छी लेश्या में बदला जा सकता है जिससे आभामंडल भी शुद्ध हो जाता है। लेश्याध्यान भाव शुद्धि का प्रयोग है। भाव ही व्यक्ति के व्यवहार का आदि स्रोत है। अतः भाव– शुद्ध होने पर व्यवहार भी शुद्ध होता है। लेश्याध्यान के प्रयोग में संबंधित रंग को चमकता हुआ आभामंडल में काल्पनिक रूप से देखते है। तत्पश्चात् इसे श्वास के साथ शरीर के भीतर लेते है। जिस केन्द्र से रंग का सम्बन्ध होता है, उस केन्द्र से अमुख रंग के प्रकाश को आभामंडल में फैलता हुआ देखते है। इसके बाद भावना की जाती है।

लेश्याध्यान में प्रमुख पांच केन्द्र तथा उनके पांच रंग निर्दिष्ट किये गये है। आध्यात्मिक दृष्टि से लेश्याध्यान का प्रयोग भाव– शुद्धि का प्रयोग है। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक रंग की अपनी तरंग दैर्ध्यता होती है तथा प्रत्येक रंग की अपनी प्रकृति होती है। ये तत्व व्यक्तित्व को

प्रभावित करते है। रंग–चिकित्सा में भी इन अतःस्रावी ग्रंथियों का सम्बन्ध रंग से होता है जिससे अनेक प्रकार के रोगों का उपचार किया जा सकता है। अतः ग्रंथियों के स्राव को भी रंगों के ध्यान द्वारा संतुलित किया जा सकता है।

लेश्या का अर्थ है– विशिष्ट रगंवाले पुद्‌गल द्रव्य के संसर्ग से उत्पन्न होने वाला जीव का परिणाम या चेतना का स्तर। लेश्या ही सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर के बीच संपर्क–सूत्र है। लेश्या के दो भेद हैं–द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या। पौद्‌गलिक लेश्या प्राणी के आभामंडल का नियामक तत्त्व है। ओरा में कभी काला, कभी लाल, कभी पीला, कभी नीला, और कभी सफेद रंग उभर आता है। भावों के अनुरूप बदलते रहते हैं। लेश्या के छह प्रकार हैं–कृष्ण, नील, कापोत, तैजस, पद्म और शुक्ल। इनमें प्रथम तीन अशुभ हैं और अन्तिम तीन शुभ हैं। भावधारा के आधार पर आभामंडल बदलता है और लेश्याध्यान के द्वारा आभामंडल को बदलने से भावधारा भी बदल जाती है। लेश्याध्यान या चमकते हुए रंगों का ध्यान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आभामंडल की व्याख्या रंगात्मक है। जिसमें लेश्या होती है उसका आभामंडल निश्चित रूप से शुभ अशुभ भावों के साथ बदलता है। यह बदलाव अच्छा है या बुरा यह जानने के लिए रंगों की भाषा जानना जरूरी है। रंग मनुष्य के भावों के साथ बदलते रहते है।

आभामंडल में होने वाले रंगों की भिन्न–भिन्न प्रकृति होती है। यह रंग मित्रता, प्रेम, स्वास्थ्य और शक्ति का सुनहरा पीला उच्च प्रज्ञा का, नीला आध्यात्मिक और धार्मिक मनोवृत्ति का, नारंगी बुद्धि और न्याय का, हरा सहानुभूति का प्रतीक है। आभामंडल में उभरने वाला स्लेटी भय और ईर्ष्या का, काला अभाव का, तथा सफेद रंग आध्यात्मिक पूर्णता का प्रतीक होता है। आभामंडल में काले रंग की प्रधानता हो तो यह मानना चाहिए कि व्यक्ति का दृष्टिकोण ठीक नहीं है, आकांक्षा प्रबल है, प्रमाद प्रचुर है, कषाय का आवेग प्रबल और प्रकृति अशुभ है, मन वचन और काया का संयम नहीं है, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं है, प्रकृति क्षुद्र है, बिना विचारे काम करता है, अविद्या, हिंसा में प्रवृत्ति इस प्रकार का भावधारा रहती है। आभामंडल में कपोत रंग की प्रधानता रहने पर व्यक्ति में वाणी की वक्रता, आचरण की कुटिलता, अपने दोषों को छिपाने की प्रवृत्ति, दुष्ट वचन बोलना, चोरी करना आदि इस प्रकार की भावधारा और प्रवृत्ति रहती है।

आभामंडल में रक्तवर्ण की प्रधानता होने पर व्यक्ति नम्र व्यवहार करने वाला, स्थिर, ऋजु, कुतूहल न करने वाला, विनम्र, जितेन्द्रिय, मानसिक समाधि वाला, धर्म में दृढ़ आस्था करने वाला, मुक्ति की गवेषणा करने वाला और पापभीरु होता है। आभामंडल में पीतवर्ण की प्रधानता होने पर व्यक्ति अल्प क्रोध मान माया और लोभ वाला, प्रशान्त चित्तवाला, समाधिस्थ, अल्पभाषि, जितेन्द्रिय और आत्मसंयम करने वाला होता है। आभामंडल में श्वेतवर्ण की प्रधानता होने पर व्यक्ति प्रशान्त चित्त वाला, जितेन्द्रिय, मन वचन और काया का संयम करने वाला शुद्ध आचरण से सम्पन्न ध्यानलीन और आत्मसंयम करने वाला होता है। सभ्य व्यक्ति के आभामंडल में उच्च स्तरीय किरणें होती है। आभामण्डल से बिमारियों का भी पता चल जाता है।